REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 7 | APRIL - 2021

''भारतीय संस्कृति के सनातन पक्ष और गाँधी जी''

डॉ. कमलेश नारायण मिश्र[1] , डॉ. अंजुलता मिश्र[2]
[1]एशोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष राजनीति विज्ञान विभाग ,
मदन मोहन मालवीय (पी.जी. कॉलेज) भाटपार रानी, देवरिया.
(दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर से सम्बद्ध)
[2]सहायक प्राध्यापिका (इतिहास विभाग)अवध सेन्टर फॉर, विमेंस कालेज कड़जा, सेमरियावॉ, खलीलाबाद (उ.प्र.)
सिद्धार्थनगर विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु से सम्बद्ध.

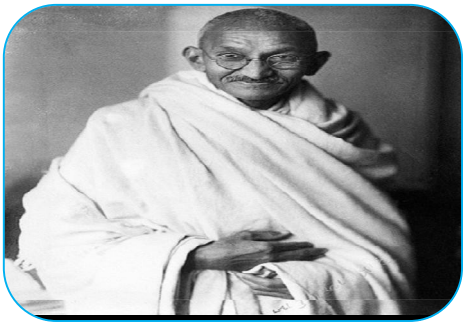

भ्रष्टाचार के इस आलम में गाँधी जी का स्मरण करना हमारी विवशता न भी होती तो भी गाँधी जी हमें याद आते हीं। आज भ्रष्टाचार, अनैतिकता, संघर्षवाद एवं आतंकवाद का इतिहास गहराता चला जा रहा है। कुछ लोग इसे नियति का चक्र मानकर हाथ पर हाथ धर लेते हैं एवं कुछ लोग इसके सर्व व्यापी स्वरूप को देखकर उसकी गम्भीरता के प्रति उदासीन हो जाते हैं जिससे इन समस्याओं की भयावहता दिन प्रति दिन बढ़ती ही जा रही है। ऐसे में अगर गाँधी जी के द्वारा अपनाये गये एवं प्रयोग में लाये गये मूल्यों पर गम्भीरता से विचार विमर्श किया जाय, तो सम्भव है कि एक नयी राह मानवता प्रेमियों को मिल सकेगी।

आज जिस तरह से समाज एवं राज्य के रक्षक ही भक्षक की सक्रिय भूमिका में सर्वत्र नजर आ रहे हैं, सत्ता जिस तरह से व्यक्तिगत ऐशो आराम का साधन बन गयी है, साथ ही सत्ता का उपयोग अपने निकट सगे सम्बन्धियों को मालामाल कर देने के लिये किया जा रहा है। ऐसे में पूरी शासन व्यवस्था के अस्तित्व पर ही गम्भीर प्रश्न चिन्ह पैदा होता जा रहा है। इस विकट एवं भयावह परिस्थिति में भारतीय जीवन दर्शन के उन मूल तत्वों से मानव जाति का भला हो सकता है जिसमें धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष के बीच संतुलन स्थापित करने की सलाह दी गयी है। ''साईं इतना दीजिये जामें कुटुम्ब समाये, मैं भी भूखा ना रहूँ साधू न भूखा जाय'' की लोकोक्ति अपने आप में भारतीय जीवन दर्शन के एक महत्वपूर्ण पहलू को उजागर करने की सामर्थ्य रखती है। महान दार्शनिक प्लेटो इस बात से चिंतित रहे कि राज्य किस तरह से संतुलित एवं न्यायपूर्ण हो। प्लेटो का मानना था कि जब तक राज्य का संरक्षक वर्ग (शासक एवं सैनिक) को कांचन एवं कामिनी के मोह से पूरी तरह से दूर न कर दिया जाय, तब तक राज्य में न्याय एवं खुशहाली सम्भव नहीं। इसके लिये उसने अपनी दार्शनिक योजना में परिवार एवं अर्थ जैसी संस्था एवं व्यवस्था से संरक्षक वर्ग को बिल्कुल अलग कर दिया। हालांकि उसके शिष्य अरस्तू ने परिवार की संस्था एवं अर्थव्यवस्था के महत्व को गम्भीरता से स्वीकार किया एवं अपनी दार्शनिक योजना में महत्वपूर्ण स्थान दिया।

जहाँ तक भारतीय दर्शन का प्रश्न है परिवार एवं अर्थ के महत्व को न केवल स्वीकार किया गया है, बल्कि उन्हें पूरी तरह स्थापित करने का सफल प्रयास पूरी सावधानी के साथ किया गया है। भारतीय दार्शनिक योजना के तहत चार तरह के आश्रम बनाये गये हैं। यथा–ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वाणप्रस्थ एवं सन्यास इसमें प्रत्येक आश्रम अपने आप में काफी महत्वपूर्ण है, परन्तु सबसे ज्यादा महत्व गृहस्थाश्रम को दिया है। साथ ही यह आश्रम एवं अन्य भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करके करता है। इस आश्रम के इतना महत्वपूर्ण होने के बावजूद मनुष्य को हमेशा बने रहने की इजाजत नहीं दी गयी है। इस आश्रम के बाद शुरू होता है वाण प्रस्थ आश्रम इस

आश्रम की व्यवस्था के अनुसार मनुष्य को सांसारिक माया–मोह के बंधनों से मुक्ति प्रयास करने की सलाह दी गयी है ताकि सन्यास आश्रम में प्रवेश करने के पूर्व वह अपने आपको इस लायक बना ले कि वह समाज की मंगलकारी कामना के निमित्त ही जीवित रहेगा। सोच का दायरा अब परिवार नहीं पूरा ब्रह्मांड होगा। सकल विश्व की कामना जीवन का ध्येय होगा। पर दुर्भाग्यवश आज मनुष्य जीवन के सांस की अंतिम डोर तक गृहस्थाश्रम से निकलना ही नहीं चाहता, बल्कि माया मोह की जाल में इतना उलम्कता चला जा रहा है कि उस जाल में रहकर ज्ञान एवं विवेक की उष्णता से वंचित होता जा रहा है, एवं भ्रष्टाचार के कीचड़ में स्वयं भी जाता है एवं उसकी बदबू पूरे समाज में फैलाता है। ऐसे में गाँधी जी के द्वारा भारतीय दर्शन के उस महत्वपूर्ण पहलू को हमेशा स्वीकार करना एवं उसके अनुकूल आचरण करने का सतत प्रयास करते रहना उनके दूर दृष्टि का परिचायक ही नहीं बल्कि आज की विपत्ति से मानवता को उबारने का ठोस उपाय भी साबित हो सकता है।

गाँधी जी केवल दार्शनिक धरातल पर ही भारतीय समाज को नहीं आँकते, बल्कि ऐसा उनके आचार एवं व्यवहार में भी परिलक्षित होता है। उनके द्वारा अति अल्प वस्त्र धारण करना पाश्चात्य की दृष्टि में अर्द्ध नग्नता का कारण हो सकता है, परन्तु भारतीय दर्शन में वह अपरिग्रह के सिद्धान्त की पुष्टि है एवं भारतीय दर्शन में शिव परम्परा का अनुसरण एवं अवलंम्बन है। अपने आचार एवं व्यवहार के कारण संभवतः देवत्व पद पर विराजमान भगवान शंकर भारतीय दर्शन एवं भारतीय जनमानस के प्रतीक हैं तभी वे एकमात्र ऐसे देवता एवं अधिष्ठाता है जिनकी पूजा सम्पूर्ण भारत में होती है एवं सभी तबकों के द्वारा होती है, चाहे वह राजा हो या रंक एक शहरवासी हो या ग्रामवासी या फिरवनवासी कारण भगवान शंकर त्याग की प्रतिमूर्ति माने जाते हैं। शंकर परम्परा त्याग, अपरिग्रह, योग्यता पर आधारित प्रतियोगिता एवं लोक–कल्याण की परम्परा रही है। यह परम्परा भारतीय शाश्वत परम्परा के मूलाधारों में से एक महत्वपूर्ण मूलाधार रही है। पुरूषोतम राम ने भी उसी परम्परा का अनुसरण किया। वन गमन, राजशी ठाटबाट का परित्याग एवं नाना प्रकार के कष्टों का अवलम्बन उसी परम्परा को आगे बढ़ाना था। भारतवर्ष लोक कल्याण के प्रति समर्पित व्यक्तियों एवं तथ्यों के प्रति हमेशा नत मस्तक रहा है एवं उसने देव पद प्रदान किया है। गाँधी जी ने कोशिश की थी कि भारतीय परम्परा के उपयुक्त पहलुओं को आधुनिक काल खण्ड में आगे बढ़ाया जाय। इसी प्रयास की परिणति गाँधी जी के आचरण एवं कार्यों में दिखाई देती है। भारतीय जनमानस एवं इस मानसिकता को ग्रहण करने वाले सभी महापुरूषों एवं सामान्यजनों ने चाहें वे दुनिया के किसी भौगोलिक सीमा प्रदेश में निवास करते हों गाँधी जी को अपना आदर्श ही नहीं स्वीकार किया बल्कि उन्हें महामानव एवं संत की उपाधि से विभूषित भी किया। साथ ही आज भी जटिल एवं भयावह समस्याओं के समाधान में गाँधी जी का न केवल स्मरण करते हैं बल्कि गाँधी जी की वजह से भारत–भूमि पर पैर रखने के पूर्व इसे चूमने एवं नमन करने में गौरव का अनुभव करते हैं।

भारतीय परम्परा वर्ग सामंजस्य की भावना से ओत–प्रोत रही है। भारतीय परिवार समरसता के तत्व का अनोखा उदाहरण है जो अन्यत्र दुर्लभ है। अगर भगवान शंकर के परिवार को ही आदर्श मानकर इस पर सूक्ष्म दृष्टि डाली जाय तो पता चलता है कि इस परिवार का प्रत्येक व्यक्ति एवं जीव लगभग विपरीत स्वभाव एवं प्रवृत्ति वाला है। किसी को मांग का धतूरा पंसद है, तो कोई लड्डू जैसे मिष्ठान का प्रेमी है, किसी की रूचि का विषय आभूषण है, कोई शांकाहारी है तो कोई मांसाहारी बाघ, बैल, सर्प, चूहा एवं मोर जैसे जीवों से युक्त परिवार जिसमें प्रत्येक की प्रवृत्ति परस्पर विपरीत है फिर भी वैमनस्य का भाव उस परिवार में परिलक्षित नहीं होता। यह निश्चय ही भारतीय संस्कृति के उत्कृष्ट एवं उज्ज्वल पक्षों का द्योतक है जिसमें प्रेम एवं सहिष्णुता का भाव विपरीत प्रकृति वालों के बीच भी सम्भव है, ऐसा स्वीकार किया गया है।

वैसे आज के परिवेश में जहाँ दहशतगर्मी, हिंसा, घृणा एवं संघर्ष का वर्चस्व है, उस अवधारणा से सहमत होना आसान नहीं होगा। संभव है कि भारतीय परम्परा में कुछ ऐसे तत्व भी आये हो जिन्हें उज्ज्वल नहीं कहा जा सकता। फिर भी इतना स्वीकार करने में कोई हर्ज नहीं दिखता कि वर्तमान परिवेश पाश्चात्य दर्शन की उपज पूरी तरह न भी हो तो इस दिशा में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

भारतीय समरस समाज में घृणा एवं हिंसा के बीज बोने में वैसे विदेशी एवं विजातीय तत्वों का हाथ रहा है जिन्होंने भारत को मात्र ''सोने की चिड़िया'' के रूप में ही देखा एवं उसके साथ सुलूक भी वैसा ही किया। सोने के लोभ में उन तत्वों ने भारत भूमि को न केवल बेरहमी से लूटा एवं रौंदा तथा भारतीय संस्कृति के सुन्दर एवं उत्कृष्ट वास्तुकला एवं ज्ञान विज्ञान के धरोहरों और केन्द्रों को खण्ड–खण्ड किया, बल्कि भारतीय समरस समाज के बीच घृणा का ऐसा बीज अपनी आर्थिक एवं राजनीतिक दुकानदारी चलाने हेतु बोया कि उस विष

बेल का असर समय के साथ भारतीय समाज में बढ़ता ही जा रहा है एवं उससे उबरने के आभार निकट भविष्य में दिखाई नहीं दे रहा है। आजादी के बाद की सरकार तो भारतवासियों की अपनी सरकारे रही हैं परन्तु उनका चरित्र भी पूर्व की सरकार से भिन्न नजर नहीं आ रहा है।

ऐसे में गाँधी जी के द्वारा समरस समाज के लिये प्रयास किया जाना उनके द्वारा भारतीय दर्शन के मर्म को गम्भीरता से समझकर उसका अनुसरण करना था। यह उनके विश्वास का हिस्सा था, न कि किसी रणनीति का हिस्सा हरिजनों को सम्मान देना, नारियों को मान देना, निषाद को गले लगाकर भाई के शब्द से सम्बोधित करना, जटायु का पूरे सम्मान के साथ दाह संस्कार करना एवं अपने राज्य के एक धोबी के आरोप को गम्भीरता से लेना था। गाँधी जी के द्वारा समरस समाज के लिये प्रयत्नशील रहने के पीछे महत्वपूर्ण कारण यह था कि कोई भी समाज संघर्ष से अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। संघर्ष में जिस ऊर्जा का क्षरण होता है, उसका उपयोग समाज के निर्माण एवं विकास कार्यों में लगाया जा सकता है। वर्ग–संघर्ष के आधार पर निर्मित तथा विकास का महल किस तरह धाराशायी हो जाता है। इसके लिये न तो बहुत दूर जाने की आवश्यकता है और न इतिहास के पुराने पन्नों को पलटने में समय गुजारने की विवशता रह गयी है। बिखरा सोवियत संघ ही इस सम्बन्ध में पर्याप्त है।

आज जिस जातीय संघर्ष की लपटों से सम्पूर्ण भारत घिरा हुआ है एवं नित्य नयी तेज लपटें बढ़ती जा रही है, संघर्ष का धुँआ गहराते जा रहा है– उसकी परिणति अंततः दबे–कुचलों की लाशों के रूप में सामने आ रही है। इस गम्भीर परिस्थिति का पूर्वोभाष एवं आंकलन गाँधी को था। गाँधी जी इसी कारण सतत् यह प्रयास करते रहे कि वर्ग संघर्ष एवं जातीय संघर्ष से बचा जाय।

आइन्सटिन जैसे महान वैज्ञानिक का यह दार्शनिक कथन कि आने वाली पीढ़ी शायद ही यह स्वीकार कर पायेगी कि गाँधी जी जैसे कोई व्यक्ति इस धरती पर पैदा हुआ था सत्य हीं है। कारण एक व्यक्ति इतना कुछ नहीं कह सकता, न ही कर सकता है। गाँधी जी ने जो कुछ कहा और किया, उसका मर्म उनको भारतीय संस्कृति के उन उज्ज्वल पक्षों से प्राप्त हुआ जिसका उन्होंने निष्ठापूर्वक प्रयोग कर विश्व को आलोकित किया। गाँधी व्यक्ति नहीं, एक आदर्श परम्परा के वाहक का नाम है जो शाश्वत है, अविनाशी है।

संदर्भ सूची

1. **महात्मा गाँधी** : भारतीय संस्कृति के प्रतीक प्रो0ए0डी0मिश्र
2. **जे वंधोपाध्याय** : सोशल एवं पॉलिटिकल थॉट ऑफ गॉधी, उद्घृत कृष्णाकांत मिश्र, राजनीति सिद्धांत और शासन, ग्रन्थ शिल्पी, नई दिल्ली 2001, पृ0 – 840
3. **वी0पी0 वर्मा** : आधुनिक राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2000 पृ0 340
4. **वी0पी0 वर्मा** : पृ0 341
5. **डी0जी0 तेन्दुलकर** : महात्मा लाईफ ऑफ मोहन दास, करम चन्द गॉधी प्रकाशन विभाग, भारत सरकार 1960 खण्ड–2 पृ0–225
6. **झवेरी एवं तेन्दुलकर** : ''महात्मा'' खण्ड-VII, 1953 पृ0 248
7. **आचार्य राममूर्ति** : गाँधी मार्ग गाँधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली जुलाई–अगस्त 2008 पृ0 16
8. **द न्यू एन** : ब्रिटानिका साइक्लोपीडिया खण्ड– II पृ0 650
9. **मोहन दास करम चन्द गाँधी** : सत्य प्रयोग अथवा आत्मकथा पृ0 97